वह परमेश्वर जो हमारे लिए मरा

मुझे कोशिश करके आपके ध्यान को आकर्षित करने दें।
मुझे आपको इकट्ठा करने दें

और हम हमारे आज रात के बड़े विषय
पर ध्यान केंद्रित करने जा रहें है

जो है, "वह परमेश्वर जो हमारे लिए मरा"।

और मैंने सोचा आज रात की शुरुवात मैं आपसे प्रसिद्ध
आखरी शब्दों के बारे में बात करके करूँगा।

अब मुझे पूरा यकीन है कि हम में से किसी ने भी
गंभीरता से विचार नहीं किया होगा कि

हमारे आखरी शब्द क्या होंगे। है ना? आपने
सचमुच नहीं सोचा होगा की वे क्या होंगे?

परंतु आज रात मैं इसका वर्णन कर
रहा हूँ क्योंकि पिछले कुछ दिनों से

मैं एक ऐसी पुस्तक पढ़ रहा हूँ जो बहुत से
जाने-माने लोगों के आखरी शब्दों से भरी है।

आप यह सोचेंगे की यह एक बहुत
दिलचस्प चीज़ है करने के लिए।

मैं यही करते हुए अपना
समय व्यतीत कर रहा हूँ

और मैं आपसे इमानदार रहूँगाः बहुत
सारे शब्द काफी साधारण हैं,

कुछ काफी उदासी से भरे हैं, पर आप कभी कभार
पाते हैं कि कुछ बहुत ही गहन हैं

और बीच बीच में आप कुछ ऐसे
पाते हैं जो बहुत मज़ाकिया है।

तो मैंने सोचा की आज रात मैं मेरे दो चहेते
अंतिम शब्दों को आपसे बाटूँगा।

क्या आप तैयार हैं? ये रहे। मेरे कुछ पसंदीदा
लोगों में से एक आदमी है जिसका नाम है जॉर्ज केली।

© Lee McMunn, 2011

जॉर्ज केली एक अमरीकी नाटक लेखक थे
और उनका 1974 में देहांत हो गया

और अपनी मृत्यु शय्या पर, उनकी भतीजियों
में से एक ने उन्हें एक बिदाई चुंबन देना चाहा।

और उन्होंने उससे यह कहाः "मेरी प्रिय, इसके पहले
की तुम मुझे चुंबन देकर विदा करो,

अपने बालों को ठीक करो। ये उलझे हुए हैं।" और बस
यही था। यह उसके मृत्यु के पूर्व के आखरी शब्द हैं।

यह मेरा पहला है। मेरा दूसरा है एक आदमी
जिसका नाम है कॉनरेड हिलटन।

वे जिम्मेदार थे हिलटन होटेल श्रृंखला के लिए जिन्हें
हम आज सारी दुनिया में देखते हैं।

और उनकी मृत्यु शय्या पर उनसे पूछा गया की यदि
उनके पास ज्ञान के कुछ शब्द हैं। और उनके पास थे।

और उन्होंने यह कहाः "शावर के पर्दे को
टब के अंदर छोड़ें"।

और बस इतना ही! ये प्रचलीत आखरी शब्द,
आपको एक क्षण के लिए भौंचक्का कर देंगे,

परंतु ये इस प्रकार के शब्द नहीं
जो हमारे जीवन को

भविष्य में बदलेंगे, बिलकुल भी नहीं।

परंतु अब मैं क्या करना चाहता हूँ कि आपको
कुछ आखरी शब्द दिखाना चाहता हूँ,

एक व्यक्ति के कुछ आखरी शब्द जो
मैं सोचता हूँ अगर हम उन्हें सचमुच समझ लें

तो वे जीवन बदल देनेवाले हैं।
अब आप उन्हें यूहन्ना के सुसमाचार में पाते हैं।

हम यीशु के मृत्यु पूर्व के आखरी शब्द जो
दर्ज किए गए है उन्हें देखने जा रहें हैं।

परंतु तकनीकि तरीके से वे वास्तव में
यूहन्ना के सुसमाचार में यीशु के आखरी शब्द नहीं हैं

© Lee McMunn, 2011

क्योंकि उसकी मृत्यु के बाद वह शारीरिक रीति
से मृतकों में से जी उठाया गया था।

परंतु यीशु की मृत्यु से पहले के आखरी
शब्दों को हम देखने जा रहें हैं।

तो यह बड़ा मददगार होगा - अपने सुसमाचार को
पकड़ें और मेरे साथ मुड़ें अगर आप कर पाएँ,

यूहन्ना अध्याय 19 की ओर। और अगर
आप आयत 17 को देखें,

मैं इससे पहले की कुछ आयतें पढ़ूँगा, और फिर
हम उसके आखरी शब्दों से समाप्त करेंगे।

तो यूहन्ना अध्याय 19 और आयत
17 से आगे।

"तब वे यीशु को ले गए, और
वह अपना क्रूस उठाए हुए,

उस स्थान तक बाहर गया, जो 'खोपडी का स्थान'
कहलाता है और इब्रानी में 'गुलगुता'।

वहाँ उन्हों ने उसे और उसके साथ और दो मनुष्यों
को क्रूस पर चढ़ाया – एक को इधर और एक को उधर

और बीच में यीशु को। पीलातुस ने एक
दोष-पत्र लिखकर क्रूस पर लगा दिया,

और उसमें यह लिखा हुआ थाः "यीशु नासरी, यहूदियों
का राजा"। वह दोष-पत्र बहुत से यहूदियों ने पढ़ा,

क्योकि वह स्थान जहाँ यीशु क्रूस पर
चढ़ाया गया था नगर के पास था,

और पत्र इब्रानी और लतीनी और
यूनानी में लिखा हुआ था।

तब यहुदियों के प्रधान याजकों ने पिलातुल से कहा
"'यहूदियों का राजा' मत लिख

परंतु यह कि उसने कहा,
मैं यहूदियों का राजा हूँ।"

© Lee McMunn, 2011

पिलातुल ने उत्तर दिया, “मैंने जो
लिख दिया, वह लिख दिया।”

जब सैनिक यीशु को क्रूस पर चढ़ा चुके,
तो उसके कपड़े लेकर

चार भाग किए, हर
सैनिक के लिए एक भाग,

और कुरता भी लिया,
परंतु कुरता, बिन सीअन

ऊपर से नीचे तक बुना हुआ था।

इसलिए उन्होंने आपस में कहा, “हम इसको न फाड़ें,
परंतु इस पर चिट्ठी डालें

कि यह किसका होगा।” यह इसलिए हुआ कि
पवित्रशात्र में जो कहा गया वह पूरा हो,

“उन्होंने मेरे कपड़े आपस में बाँट लिए
और मेरे वस्त्र पर चिट्ठी डाली”

अतः सैनिकों ने ऐसा ही किया।
यीशु के क्रूस के पास उसकी माता,

और उसकी माता की बहिन, क्लोपास की प्तनी
मरियम और मरियम मगदलीनी खड़ी थी।

जब यीशु ने अपनी माता, और उस चेले को
जिससे वह प्रेम रखता था पास खड़े देखा

तो अपनी माता से कहा, “हे नारी, देख,
यह तेरा पुत्र है।” तब उसने चेले से कहा,

“यह तेरी माता है।” और उसी समय से
वह चेला उसे अपने घर ले गया। इसके बाद

यीशु ने यह जानकर कि अब सब कुछ पूरा हो चुका,

इसलिए कि पवित्रशास्त्र में जो कहा
गया वह पूरा हो, कहा, “मैं प्यासा हूँ।”

वहाँ सिरके से भरा हुआ एक बरतन रखा था,
अतः उन्होंने सिरके मे भिगोए हुए

© Lee McMunn, 2011

स्पंज को जूफे पर रखकर
उसके मुँह से लगाया।

जब यीशु ने वह सिरका लिया,
तो कहा, "पूरा हुआ"

और सिर झुकाकर
प्राण त्याग दिया।"

ये है यीशु के आखरी दर्ज किए
शब्द उसकी मृत्यु से पहले।

दो शब्द जीवन बदल देनेवाले हैं
अगर हम उनकों समझें। पूरा हुआ।

और आज रात हम कोशिश करेंगे समझने की कि
यीशु के कहने का क्या अर्थ है

जब उसने मृत्यु से पहले यह कहा। अब जो
पहली चीज़ मैं आपको दिखाना चाहता हूँ

वह है जो उसने नहीं कहा। उसने क्या नहीं कहा?
वह यह नहीं चिल्लाया "मैं खत्म हो गया हूँ"।

तो यह ऐसा नहीं था की यीशु अपने
आप में जानता था कि वह अपने

जीवन के आखरी क्षणों में आ रहा है। यह ऐसा
नहीं कि वह महसूस करे, अच्छा, यहि तो है

और वह चिल्ला उठा "मैं खत्म हो गया हूँ"।
वह चिल्ला उठा, पूरा हुआ।

वह किस ओर इशारा कर रहा है। "क्या" पूरा हुआ?
अच्छा, यहाँ पहचान में इन पिछले सप्ताहों में,

हम यीशु के इस नाटकीय छुटकारे
के मिशन को देख रहें हैं।

हमने पाया कि वह
परमेश्वर का अनंत पुत्र है

जो एक महिमामय छुटकारे के मिशन पर पिता के द्वारा भेजा
गया है। उसके पिता ने इस जगत से इतना प्रेम किया

© Lee McMunn, 2011

कि उसने अपने एकलौते पुत्र को इस जगत में भेजा
कि वह वे सारे जरूरत के कार्य करे

ताकि आपके और मेरे जैसे बागी परमेश्वर के साथ
स्वर्ग में अनंतकाल बिता सकें।

और अब यहाँ अंत में, यीशु चिल्ला रहा है, "पूरा हुआ!",
यह समाप्त हुआ।

यह पूरा कर दिया गया है।
सब कुछ जो आवश्यक है

आपके और मेरे जैसे बागियों को परमेश्वर
के साथ स्वर्ग में अनंतकाल बिताने के लिए

"पूरा हुआ! यह हो चुका है।
मैंने सब कुछ पूरा कर दिया!"

अब आज रात हम कोशिश करके समझेंगे
की यीशु ने क्या किया था।

यह निश्चित करने के लिए कि यह सब पूरा हुआ था।
यह चिल्लाना विजय का है, हार का नहीं,

यह नहीं कि, "ओह नहीं, यह खत्म हो गया"
परंतु, "यह पूरा हो गया, यह समाप्त हुआ"।

अच्छा, आज रात मैं दो बहुत महत्वपूर्ण चीज़ों पर लक्ष
केंद्रित करना चाहता हूँ जो यीशु ने की

यह निश्चित करने के लिए कि
सबकुछ पूरा हो गया था। वे क्या हैं?

पहली चीज़ जिसके लिए उसने क्रूस
पर कष्ट सहा। हम उसे देखने जा रहे हैं।

और फिर हम उसके सिद्ध
जीवन को देखने वाले हैं।

और मैं कोशिश करके आपको यकीन दिलाना
चाहता हूँ क्यों ये दो चीज़ें जरूरी है

हमारे परमेश्वर के साथ अनंतकाल बिताने के लिए।
तो सबसे पहलेः

© Lee McMunn, 2011

यीशु का क्रूस पर कष्ट उठाना।
अब हमारी युनाईटेड किंगडम की परंपरा में

ऐसा लगता है की क्रूस एक फैशन की चीज़
बन गया है बहुत सारे लोगों के लिए।

कुछ लोगों को छोड़ कर बाकि सब के लिए।
आप इसे जाँच सकते है, आज रात यहाँ से बाहर जाएँ

नज़दीकी शॉपिंग सेंटर के
इर्द-गिर्द नज़रें दौड़ाएँ।

मैं आपको उत्तेजन दूँगा कि लोगों को नज़दीकी
से ना घूरें। शायद वे सोचें कि आप अजीब हैं

सिर्फ इर्द-गिर्द नज़रें दौड़ाएँ, सिर्फ देखें की लोगों
के गले में क्या लटक रहा है।

यह शायद सोना या चाँदी हो सकता है परंतु वहाँ एक
छोटा क्रूस है शायद उनके ठुड्डी के नीचे

परंतु यीशु के समय में क्रूस को एक अलग
तरह से देखा जाता था।

यह कोई फैशन की चीज़ तो बिलकिल नहीं था,
वह मौत कि सज़ा लागू कीए जाने वाली जगह थी।

यह वह जगह थी जहां अपराधियों का एक बहुत
ही सार्वजनिक रीति से कत्ल किया जाता था।

यह वह जगह थी जहाँ दूसरे
लोगों को चेतावनी दी जाती थी,

'अगर आप रेखा से बाहर कदम रखते हैं, तो
आप भी यहाँ लटकाएँ जाएँगे।'

अब मैं कल्पना करता हूँ आज इसके समान
मे होगा इलेक्ट्रिक कुर्सी।

क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं? कल आपका मित्र
आपके पास आता है और वे बहुत उत्तेजित हैं

क्योंकि उनके पास आपको दिखाने के लिए कुछ है।
उन्होंने अभी कुछ खरीदा है

© Lee McMunn, 2011

सुनार की दुकान से। और आप सोचते है वह क्या
होगा? और वे इसे खोलते है, और ये रहा,

एक सुंदर चाँदी की इलेक्ट्रिक
कुर्सी आप क्या करते हैं?

क्या फिर आप उनसे यह कहते,
"ओह, मुझे भी ऐसी एक कहाँ मिलेंगी?"

नहीं, यह अजीब है। और अगर आप उनसे कहते,
"मुझे बताएं, आपने इसे क्यों पहना है?"

और उस व्यक्ति ने कहा,
"यह मेरे अंकल जॉन को याद करने के लिए है

क्योंकि कुछ साल पहले इसी दिन उनको
सज़ा-ए-मौत मिली थी।" हम ऐसा नहीं करेंगे, है ना?

हम उसके बारे में शेखी नहीं बगारेंगे।

और तौभी शुरुवात के मसीहियों और मसीही
जो यीशु के समय से हैं ने

घमंड किया यीशु के क्रूस
पर कष्ट सहने के बारे में।

वे यीशु के कष्ट सहने के
बारे में शर्मिंदा नहीं हुए।

उन्होंने उसे कालीन के नीचे
छुपाने की कोशिश नहीं की।

परंतु उन्होंने सभी को, और सब जगह
बताने की कोशिश की, यीशु ने क्रूस पर कष्ट सहा।

अब ऐसा क्यों? अच्छा, वे जानते थे की वह गुनहगार नहीं है।
वे जानते थे कि वह निर्दोष था।

परंतु यह इससे ज्यादा था। क्योंकि वे जानते थे,
जैसे हम जानते हैं जैसे ही हम बाइबल पढ़ते है।

कि जैसे यीशु क्रूस पर लटकाया गया वह आपके
और मेरे जैसे बागियों

की जगह पर कष्ट सह रहा था, परमेश्वर के न्याय
को सह रहा था जिसके हम योग्य है

© Lee McMunn, 2011

ताकि हमें कभी भी उसका सामना ना करना पड़े।
अब हम यीशु के कष्ट सहने

के बारे में सबकुछ नहीं जानते हैं।
हम यह सही तरीके से नहीं जानते की

यीशु को क्रूस पर कष्ट सहना कैसे लगा होगा।
परंतु हम यह जानते हैं।

कि वह शारीरिक कष्ट सहने
से कहीं अधिक था।

यह रुचिपूर्ण है जब आप सुसमाचारों में यीशु
के कष्ट सहने के बारे में पढ़ते है

वे बहुत ही थोड़ा ध्यान देते है यीशु के
क्रूस पर की शारीरिक पीड़ा पर।

दरअसल जब हम यूहन्ना अध्याय 19 में पढ़ते है वह
साधारणतया कहता है, "और उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ा दिया।"

अब उसने शारीरिक रूप से
भयानक दर्द ज़रूर सहा,

परंतु बाइबल हमें कहने की कोशिश करती है कि एक
और कष्ट था जो अधिक गहरे स्तर का था,

बहुत गहरे आत्मिक स्तर पर। अब हम यह सही
तरीके से नहीं समझते की यीशु को कैसे लगा होगा

परंतु हम यह जानते हैः की उसके आखरी साँस
लेने से पहले, उसकी मृत्यु से पहले

उसने वह सारा कष्ट सहा
जो उसे सहना जरूरी था।

ऐसा नहीं की यीशु कि मृत्यु हुई और फिर उसे
नर्क में जाना पड़ा और कष्ट सहने के लिए,

परंतु सबकुछ जो उसको सहना जरूरी था,
उसने क्रूस पर सह लिया था।

अब मैं यह कैसे जानता हूँ? क्योंकि वह क्या चिल्लाया
उसकी मृत्यु से पहले? "पूरा हुआ!"

© Lee McMunn, 2011

यह नहीं कि, "आधा पूरा हुआ,
अभी भी थोड़ा करना बाकी है।"

नहीं, नहीं, यह पूरी तरह
और बिलकुल पूरा हुआ है।

अब कुछ ही क्षणों में हम यीशु के सिद्ध
जीवन के बारे में सोचेंगे, परंतु इसके पहले

मेरे पास दो प्रश्न हैं जो शायद आपके
दिमाग में घूम रहे होंगे।

और अगर वे नहीं भी है तौभी वे आ जाएंगे
एक मिनिट में। यह रहा पहला प्रश्नः

कैसे एक व्यक्ति कीमत चुका सकता है, सजा
सह सकता है, अन्य करोडों के लिए?

इसके बारे में सोचिए। कैसे यीशु एक
मनुष्य, कैसे एक व्यक्ति

संभवतया सह सकता है युगों के अंत
तक के करोडों बागियों की जगह पर?

यह कैसे उचित हो सकता है?
यह कैसे कार्य करेगा? अच्छा, उत्तर?

यह सबकुछ यीशु की पहचान के बारे में है।
वह कौन था? परमेश्वर का सनातन पुत्र

बहुत ही मूल्यवान, अमूल्य।
और वहाँ था सनातन, अनंत परमेश्वर का पुत्र

आपके और मेरे जैसे लोगों, करोडों
बागियों कि जगह पर सहते हुए।

और तौभी यीशु वहाँ दाम चुका रहा है जो हम
सभी के लिए काफी बड़ा है।

तो यह है पहला प्रश्न। कैसे यीशु करोडों
बागियों के लिए दाम चुका सकता है।?

इस कारण क्योंकि वह कौन है-
परमेश्वर का सनातन, अनंत पुत्र।

© Lee McMunn, 2011

परंतु दूसरा प्रश्न है, अच्छा, परमेश्वर हमें
ऐसे ही क्षमा क्यों नहीं करता?

इसके लिए मुझे एक स्वयंसेवक कि ज़रूरत है।
मैं जानता हूँ आप इस समय परेशान हो जाते है।

मुझे देखने दें, मैं किसे चुन सकता हूँ? रॉबर्ट!
यह मेरा स्वयंसेवक है आज रात।

आप रॉबर्ट कि ओर देखते हैं है ना,
आप क्या सोचते है? आदरणीय व्यक्ति।

वह एक बढ़िया नौजवान लगता है,
बहुत सम्माननीय, बहुत आदरणीय

आप उसपर विश्वास कर सकते हैं, है ना? हाँ?
बहुत बढ़िया, वहाँ कुछ सिर हिल रहे हैं, रॉबर्ट।

तो रॉबर्ट एक दिन मेरे पास आता है और कहता है,
"ली, मैं आपकी कार उधार लेना चाहता हूँ।"

मैं सोचता हूँ ठीक है। वह कहता है, "मैं उसे संभालूंगा ,
मैंने कुछ ड्राईविंग के पाठ सीखे हैं

मेरे पास अपना बीमा है, मुझे सिर्फ चाभियों की जरूरत है।
मुझे एक संदेश देने जाना है।"

मैं सोचता हूँ, "बहुत खूब, रॉबर्ट। यह रही मेरी चाभियाँ,
इसका ध्यान रखें, मेरे लिए बहुत मूल्यवान है।"

देखें आप क्या करते हैं। और वह मेरी ओर देखकर मुस्कुराता है।
मैं दरवाज़ा बंद करता हूँ और वह मेरी कार में है।

अब यह पता चलता है की रॉबर्ट एक
बौए रेसर है। उसे रफ्तार पसंद है

तो वह चींघाड़ते हुए किनारे से चलाता है और
वह मेरी कार को सड़को पर भगाता है।

वह सारे किनारों को नहीं टालता,
कभी कभी वह उनसे टकराता है,

और वह सारी दिवारों को नहीं टालता।

वह वही पूराना मस्ती भरा समय बिताता है,
और वहाँ खरोंचे है, वहाँ बड़ी चोटें है।

© Lee McMunn, 2011

और वह सड़को पर दहाड़ता हुआ निकलता है और
दिन के अंत में, हैण्ड ब्रेक घूमता है,

नाटकीय, और वह दिवार से टकराता है और पूरी चीज़
को तबाह कर देता है। वह कार से बाहर निकलता है।

काफी हिचकिचाते हुए वह मेरे दरवाज़े पर आता है
और घंटी बजाता है।

और मैं बाहर देखता हूँ और मेरी कार वहाँ है!
और वहाँ मेरी दिवार है!

पता चलता है कि उसके पास कोई बिमा नहीं है,
और वह कहता है, "क्या आप मुझे क्षमा करेंगे?"

मैं क्या करता हूँ? अच्छा, मैं मेरे
अनुग्रह में उसे क्षमा करता हूँ

परंतु वहाँ फिर भी एक प्रश्न बचा हैः
जो तोड़-फोड़ हुई है उसकी

कीमत कौन चुकाएगा? एक कीमत है
जिसे चुकाना ज़रूरी है

उस सारी तोड़-फोड़ के लिए जो हमने इस दुनिया
में की है। परंतु परमेश्वर ने खुद उसे चुकाया है।

अब अगर यह एक महत्वपूर्ण मुहावरा है तो
आप इसे संभाल कर रख सकते हैः

क्षमा मुफ्त है, परंतु सस्ती नहीं।

यीशु मसीह उस क्रूस पर गया है
और अब हमें क्षमा उपलब्ध है।

उसने अपनी बाहों को खोला है
और आज वह हम में से किसी से भी कह सकता है।

"आओ तुम जैसे भी हो, मुझे अपना अधिकार दो
और क्षमा उपलब्ध है।"

परंतु वह सस्ती नहीं। हमारी क्षमा का
क्या दाम था? यह स्वयं मसीह का

क्रूस पर कष्ट सहना था। तो यह
पहली चीज़ है जो आवश्यक है

© Lee McMunn, 2011

हमें परमेश्वर के साथ हमेशा के लिए स्वर्ग में
जीने केलिए। यीशु को क्रूस पर दुख उठाना ही था।

दूसरी चीज़ जो आज रात हम देखने जा रहें है
वह है यीशु का सिद्ध जीवन।

अब यहाँ कोई संदेह नहीं, है क्या?
आप सुसमाचारों से पढ़ते हैं और यीशु

बिलकुल सिद्ध जीवन जीता है। हर समय वह स्वेच्छा से,
आनंदीत होकर अपने पिता कि आज्ञा का पालन करता है।

ऐसा कोई भी क्षण नहीं जब वह जो उसका
पिता कहता है नहीं करता।

पूरी तरह से और बिलकुल सिद्ध।
परंतु प्रश्न यह हैः

उसे सिद्ध जीवन क्यों जीना था?

अच्छा, कई सारी बातें हैं जो मैं कह सकता हूँ
परंतु आज रात जिस बड़ी चीज़ पर

मैं लक्ष केंद्रित करना चाहता हूँ वह स्वर्ग में
प्रवेश कि मांगों से जुड़ी है।

बाइबल हमें यकीन दिलाती है कि स्वर्ग की प्रवेश
आवश्यकता है 100% आज्ञा पालन

इस जीवन में। 50% नहीं, 75 नहीं, 85 नहीं,
95 नहीं, परंतु 100% आज्ञा पालन

उसके लिए जो परमेश्वर ने कहा है।
यहीं स्वर्ग में प्रवेश के स्तर हैं।

अब मैं नहीं जानता की आप इसे कैसे सुनते हैं।

कभी कभी लोग इसे सुनते हैं और सोचते हैं,
“यह कुछ ऊंचा है, नहीं क्या?

यह थोड़ा अनुचित लगता है। सचमुच
परमेश्वर हमसे थोड़ा ज्यादा मांग कर रहा हे।

सच में उसने स्तरों को नीचे करना चाहिए।”
परंतु मेरा प्रश्न है,

हम 100% से कम कि क्यों अपेक्षा करें?

© Lee McMunn, 2011

इसके बारें में सोचें। सिर्फ कल्पना कीजिए की मैंने अमेरिका
जाने का निर्णय लिया

अपना नाम और भविष्य बनाने के लिए।
क्या आप इसे पसंद करेंगे?

क्या आप सोचते हैं यह मेरे लिए अच्छा होगा कि
आप सभी को छोड़ दूँ और अमेरिका चला जाऊँ?

परंतु मैं तैयार हूँ, मैं अमेरिका जाता हूँ
मेरा नाम और भविष्य बनाने केलिए।

जब मैं वहाँ हूँ मैं निर्णय लेता हूं मैं अमेरिका के वरिष्ट
विश्वविद्यालयों में से किसी एक मे पढ़ाई करना चाहता हूँ।

मुझे क्या पता चलेगा जब मैं उन वरिष्ट
विश्वविद्यालयों मे अर्ज़ी देता हूँ?

मुझे पता चलेगा कि प्रवेश के लिए
शर्तें बहुत, बहुत ऊंची है।

अब यह ठीक है, है ना?
क्योंकि वे बड़े स्तर संस्था की

गुणवत्ता को दर्शाते हैं। यह ठीक है,
आप इसी कि उम्मीद करते हैं।

स्वर्ग की प्रवेश आवश्यकताएँ, 100%

जो परमेश्वर की गुणवत्ता
और सिद्धता को दर्शाता है।

अब हमारी समस्या क्या है?
हमारी समस्या साधारण यह नहीं

की हम इस तरीकें से जीए हैं कि हम
परमेश्वर की सज़ा के हक्कदार है।

यह उस समस्या एक बड़ा पहलू है,
परंतु वहाँ और कुछ है।

न सिर्फ हम सज़ा के हक्कदार है परंतु
हम उस तरीके से नहीं जीए

की हम परमेश्वर के सिद्ध स्तरों तक पहुँच सकें।
और तौभी यहाँ एक अद्भुत,

© Lee McMunn, 2011

और मै सच कह रहा हूँ, अद्भुत,
प्रस्ताव है यीशु मसीही कि ओर से।

वह हमसे कहता है की न सिर्फ
मैंने तुम्हारी जगह पर कष्ट सहा,

परंतु मैं आपकी जगह में जीया हूँ।
न सिर्फ मैं आपको आपकी

सभी बुराईयों के लिए क्षमा देता हूँ परंतु मैं आपको
मुझसे जुड़ने कि संभावना

और मेरी सिद्धता से लाभ पाने का प्रस्ताव देता हूँ।
क्षमा और सिद्धता

यह उसके दो पहलू हैं जो यीशु मसीह
हमें देने का प्रस्ताव रखता है।

और वह हमसे कहता है जैसे हम उसके
पास व्यक्तिगत रीति से आते हैं

हम जो कुछ उसने किया है उससे फायदा ले सकते हैं।
हम इसे कैसे समझते हैं?

मैं सोचता हूँ कि बेहनरीत उदाहरणों में से एक यह
समझने के लिए की क्या हो रहा है

वह है शादी का उदाहरण

अब मैं जानता हूँ कि हर बार इन उदाहरणों
में मैं शादी के नजदीक आता हूँ

आप में से कुछ कहते है, "ओह नहीं, वह फिर वहाँ पहुंच गया,
वह अपने बीवी के बारे में बात करने जा रहा है।"

मैं अपनी बीवी के बारे में बात करना पसंद करता हूँ,
आप यह जानते है।

परंतु मैं सोचता हूँ की बाइबल शादी के इस उदाहरण
का उपयोग करती है

हमारी यीशु के साथ एकता को समझने मे मदत
करने के लिए। शादी में क्या होता है?

उस दिन कई वादे किए जाते हैं।
मुझे याद है मेरे बीवी को कुछ ऐसा कहते हुए,

© Lee McMunn, 2011

"मेरे पास जो कुछ है मैं तुमसे बाँटता हूँ।"
और उसने वही चीज़ मुझ से भी कही।

और उस समय एक नए कानूनी
और गहन रिश्ते कि शुरुवात हुई।

और वहाँ हमारे बीच में बढ़िया बाँटना है।

तो मैंने हर एक चीज़ लाई जो मुझे
मेरी शादी में लानी चाहिए

और उसने भी सारी चीज़ें लाई जो शादी में लानी थी,
और हमने वहाँ बाँटा।

हमने क्या लाया? विकी काफी
सारा पैसा लाई, वह बढ़िया था,

यह सचमुच अच्छा था। हम उसके बारे
में अकसर बातें करते हैं।

हम अब भी समझने की कोशिश कर रहे हैं कि मैं
हमारी शादी में क्या लाया था। परंतु उस दिन क्या हुआ

कि एक नए कानूनी और गहन रिश्ते
कि शुरुवात हुई। और हमने बाँटा।

बाइबल कहती है कि जब हम यीशु के पास आते हैं,
जब हम उसके पास व्यक्तिगत रीती से आते हैं,

हम जैसे हैं, और उसको आत्मसमर्पण करते हैं,
कुछ तो नया और कानूनी और गहन होता है -

एक रिश्ता इतनी नज़दीकी का।
और वहाँ बढ़िया बाँटना है।

अब इस नए रिश्ते में, मैं यीशु के साथ के रिश्ते
में क्या लेकर आता हूँ?

मैं मेरा लेखा-जोखा लाता हूँ। मैं मेरी
बुराईयाँ लाता हूँ। और यीशु मुझसे क्या कहता है?

"मैंने इसका दाम चुकाया है।" और मैं उससे
कहता हूँ, "आपने कितना दाम चुकाया है?"

और वह कहता है, "मैंने सबकुछ का दाम चुकाया है।"
"सबकुछ का?" "हाँ, आपकी सारी बुराईयों का -

© Lee McMunn, 2011

भूतकाल, वर्तमान और भविष्य।
मैनें एक कीमत चुकाई है जिसमें सबकुछ आ जाता है।"

और मैं कहता हूँ, "बहुत बढ़िया!" परंतु,
वह कहता है, "इतना ही नहीं,

क्योंकि मैं अपना सिद्ध आज्ञा पालन भी लाता हूँ
और इस सिद्ध एकता के नए रिश्ते

में आपको इससे फायदा होता है।
और अब आप स्वर्ग के बारे में निश्चित हो सकते है

य़ह सब जो कुछ मैंने किया उसके कारण।"

तो यह मेरे कुझ करने के बारे में बनलकुल भी नहीं है,
यह सब कुछ यीशु ने जो पहले ही किया है उसके बारे में है।

इस वक्त शायद आप आपके बार में सोच रहें होंगे,
"रुकिए, अगर वह सच है,

अगर मैं आपको समझा हूँ, यकीनन इसका मतलब है कि
मैं जैसा चाहता हूँ वैसा जी सकता हूँ।

आएं, मुप्त क्षमा,
यीशु का सिद्ध आज्ञा पालन,

यकीनन इसका मतलब है कि स्वर्ग में
मेरी जगह निश्चित हैं?" हाँ, है।

"परंतु यकीनन इसका मतलब यह नहीं कि मैं जैसा
चाहता हूँ वैसे जी सकता हूँ।"

अच्छा, मुझे आपको दो कारण देने दें की क्यों
आपको ऐसा कभी नहीं करना चाहिए।

शादी के बारे में वापस सोचें। जब मैंने मेरी पत्नी से विवाह
किया और वह अँगूठी उसकी ऊँगली में थी।

मैं आपको बताता हूँ मैं क्या नहीं सोच रहा था
मैने नहीं सोचा, "बढ़ियां!

अगूठी उसकी उंगली में है। बहुत खूब, जो मैं चाहता
हूँ वह मैं कर सकता हूँ।" मैंने यह नहीं कहा।

मैंने सोचा, "मैं अब उसे प्रसन्न करने
के लिए जीना चाहता हूँ।"

© Lee McMunn, 2011

अच्छा, वही सच है यीशु के साथ रिश्ते में।

हम अपने महान राजा को प्रसन्न करने केलिए
जीना चाहते हैं जो हमारे लिए मरा।

परंतु दूसरा कारण है, याद रखें
यीशु के बिना जीवन कैसा होता है।

यह नहीं की यीशु के साथ जीवन
सचमुच बेरंग और उबाऊ है

परंतु उसके बगैर जीवन में ही
सारा मजा और आनंद है। नहीं!

हम पहले ही देख चुके हैं यह सही नहीं है।
हम पीछे जाना क्यों चाहेंगे?

उस समुद्र तट की व्हेल को याद करें जो बचाइ गई
और महासमुद्र में डाली गई? वाह!

वे नहीं कहते, "ठीक है, समुद्र तट पर वापस
जाना अच्छा होगा, वहीं गतिविधियाँ हैं।"

नहीं, यीशु के साथ जीवन है जहाँ पूर्णता है।
और तो यीशु मसीह हमें जो प्रस्ताव देते है

वह है जीवन जीने की शक्यता जैसे की उसे प्रयोजन
किया गया था जीने के लिए,

परंतु स्वर्ग में भविष्य की निश्चिचता के साथ। क्यों?

सब क्योंकि जो उसने किया है।

तो वे है मैं सोचता हूँ आखरी जाने-माने अंतिम शब्द।
वे अनावश्यक नहीं है, हैं क्या?

परंतु अगर आप उन्हें समझते हैं
तो वे जीवन बदले देनेवाले है।

दो शब्द जो अपके जीवन को बदल सकते हैः
पूरा हुआ।

यहाँ बहुत कुछ है सोचने केलिए,
क्यों ना आप अपने टेबलों पर जाएं

और इसके बारे में बातचीत करें?

© Lee McMunn, 2011

Identity – Who is God? Who are we?

© Lee McMunn, 2011

All rights reserved. Except as may be permitted by the Copyright Act, no part of this publication may be reproduced in any form or by any means without prior permission from the publisher.

Published by 10Publishing, a division of 10ofThose Limited.

All Hindi scripture quotations are taken from Hindi-O.V. © The Bible Society of India.

10Publishing, a division of 10ofthose.com
Unit 19 Common Bank Industrial Estate, Ackhurst Road, Chorley, PR7 1NH, England.
Email: info@10ofthose.com
Website: www.10ofthose.com